पाठ 11. समझदार सेनापति

इस पाठ को बच्चे कक्षा में सस्वर पढ़ेंगे। इससे उनके श्रवण, वाचन व लेखन-कौशल का विकास होगा। मंत्री के चरित्र के माध्यम से उनमें सहयोग की भावना जागेगी। वे दूसरों का भला करना सीखेंगे। पाठ के प्रश्न-उत्तर करने से उनका भाषा-ज्ञान बढ़ेगा।

पाठ की भूमिका

हम सभी जानते हैं कि हमें सदैव सच बोलना चाहिए। झूठ बोलना पाप होता है। दुनिया में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो झूठ बोलकर दूसरों की गलतियों को छिपा देते हैं और उन्हें सुख पहुँचाने का प्रयास करते हैं। आज हम जो कहानी पढ़ने वाले हैं वह एक ऐसे मंत्री की कहानी है जो झूठ बोलकर एक कैदी की जान बचा लेता है। उसने जो किया वह सही था या गलत? बच्चों से इसी प्रश्न पर चर्चा करें।

पाठ का परिचय

किसी राजा ने एक बार एक कैदी को मौत की सज़ा दी। कैदी ने राजा को भला-बुरा कहा परंतु राजा ने मंत्री से जाना कि कैदी प्रशंसा कर रहा है। यह जानकर राजा ने कैदी की सज़ा माफ़ कर दी। तभी दूसरे मंत्री ने बताया कि कैदी उनकी बुराई कर रहा था अत: कैदी को सख्त सज़ा दी जानी चाहिए। राजा को दूसरे मंत्री की बात सच होने पर भी अच्छी नहीं लगी क्योंकि उसके मन की भावना दूषित थी।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

किसी की जान बचाने के लिए बोला गया झूठ भी सच से अच्छा होता है। ऐसा सच जो किसी की जान ले ले वह किसी काम का नहीं। मनुष्य को हमेशा अपने मन की भावना शुद्ध व पवित्र रखनी चाहिए।

पाठ का वाचन

इस कहानी का पहले स्वयं सस्वर वाचन कर बच्चों को समझाएँ। इसके बाद एक-एक कर सभी बच्चों से पाठ के कुछ अंश पढ़वाएँ। बच्चे शब्दों को तोड़-तोड़कर कै-दी या मौ-न की तरह न पढ़ें या वाक्यों को शब्दों की तरह रुक-रुक कर न पढ़ें – इस पर ध्यान दें। बच्चे पढ़ रहे हों तो बीच-बीच में उनसे प्रश्न करें और उन्हें उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करें।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चे अब कहानी को पूरी तरह से समझ गए हैं। बच्चों से कहानी से संबंधित कुछ प्रश्न पूछें। जैसे – उन्हें कौन-से मंत्री का जवाब अच्छा लगा? दूसरे मंत्री ने राजा से क्या कहा? दूसरे की भलाई के लिए झूठ बोलना अच्छा क्यों होता है? तुम अगर राजा की जगह होते तो क्या करते? राजा को पहले मंत्री की बात क्यों अच्छी लगी?